CS (Main) Exam : 2014

C–DRN–N–JJOC

HINDI

(Compulsory)

Time Allowed : Three Hours	Maximum Marks : 300

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in HINDI (Devanagari script) unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबन्ध लिखिए : 100

(a) राजनीति में स्त्रियों की भूमिका

(b) क्या भारत को चीनी अर्थव्यवस्था की वृद्धि से डरना चाहिए?

(c) भारतीय समाज में तलाक की स्वीकृति में वृद्धि

(d) क्या कठोर क़ानून नैतिकता के पालन के लिए बाध्यकारी हो सकते हैं?

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर, उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट और शुद्ध भाषा में दीजिए : 12×5=60

वैश्विक पैमाने पर लोगों की एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की प्रक्रिया शताब्दियों पहले शुरू हुई थी जब मनुष्य जाति ने समूहों में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विभिन्न कारणों से जाना शुरू किया। ये कारण थे—चारागाहों अथवा कृषियोग्य भूमि की तलाश, निष्ठुर शासन अथवा यंत्रणा से पलायन, विचार अथवा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की चाहत अथवा मात्र घूमने की लालसा। आप्रवासी अपने सामान की तरह अपने सांस्कृतिक आधिपत्य को सँजोते हैं और मार्ग में अथवा नयी व्यवस्था में उसे प्रोन्नत करने का प्रयत्न करते हैं। मार्ग में मिलने वाली दूसरी जनजातियों से वे या तो युद्ध या व्यापार या विवाह या समान उपक्रमों के माध्यम से साहचर्य स्थापित करते हैं। शुरुआत में वाग्युद्ध का तनावपूर्ण समय रहता है, कुछ समय बाद वातावरण शान्त हो जाता है और शान्ति अपने पूरे कौशल एवं रचनात्मकता के साथ फलने-फूलने लगती है। लेन-देन सम्बन्धों का आधार बन जाता है। किसी भी संस्कृति के आधिपत्य के बिना एक स्वतंत्र वातावरण में प्रत्येक समूह एक बहुमुखीन समाज के रूप में पनपता है। अतः सम्भव है कि मंगोलिया के लोग अलास्का चले गए हों, एंग्लो-सेक्सन ब्रिटेन में बस गए हों, शायद हज़रत मूसा ने चुने हुए लोगों का पवित्र या पूर्व-निर्धारित भूमि की तलाश में नेतृत्व किया हो। शायद कोलम्बस ने यूरोपीय देशों को वैश्विक दुस्साहस की ओर अभिमुख करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हो। तभी से उपनिवेशवाद दूसरे देशों एवं संस्कृतियों को जीतने का एक साधन बन गया और इन विजित देशों को विजेताओं के प्रभुत्व में लाने लगा। आज व्यापार और धंधा बड़े पैमाने पर लोगों के एक देश से दूसरे देश को स्थानान्तरण के शक्तिशाली कारण हैं। प्रत्येक समूह पूर्वजों का अन्तर्बोध, पुराने घर की मीठी स्मृति, एक बीते हुए समय को सँजोए रखता है। एक या दो पीढ़ी गुज़र जाने के बाद सम्मिलन पुराने सम्बन्धों-सम्पर्कों के बहुत थोड़े निशान रहने देता है। शायद अगली शताब्दी में कोई यह भविष्यवाणी करने का ख़तरा उठाए कि दुनिया की आबादी अपनी पुरानी क्षेत्रीय पहचान को जीवित रखने में बहुत कठिनाई अनुभव करेगी। जिस समय हम जहाँ रहते हैं, वही हमारा क्षेत्र हो जाता है। हम नए स्थान के रंग-गंध के आदी हो जाते हैं। स्थानिकता वैश्विकता में घुल-मिल जाती है। आने वाले समय में बहुत-से थोड़े लोग ही रह जाएँगे जो अपनी पुरानी अस्मिता को बचाए रख सकने में सफल होंगे। नयी व्यवस्था समूचे तंत्र को सर्वत्र नवीकृत कर देगी। पहले से ही पुरानी मान्यताओं से मुक्त पीढ़ियाँ भविष्योन्मुख हैं एवं खोई हुई अस्मिताओं को सँजोए रखने की भावुकता से पूर्णतया मुक्त हैं। कोई भी संस्कृति या पुरुष या स्त्री पृथकतावाद में नहीं रह सकता। केन्द्र की ओर आने की प्रवृत्ति वाली और केन्द्र से हटने की प्रवृत्ति वाली शक्तियाँ थोड़े समय के लिए ही रह सकती हैं। असंख्य पीढ़ियों ने भले ही यह प्रार्थना की हो कि प्रत्येक नागरिक की वैयक्तिकता बनी रहे, अपनी आस्था में वह सुरक्षित रहे और बाहरी प्रभावों से अपने को पूर्णतया मुक्त

रखे लेकिन तब भी हम भली-भाँति जानते हैं कि हम अत्यधिक संवेदनशील, क्षतिग्रस्तता के भय से आक्रान्त, छिद्रपूर्ण, अयाचित प्रतिक्रियाओं और उत्तरों के प्रति संग्रहणशील और अनाश्रित हैं और कभी तुरन्त आश्रित भी। 'जीन्स', 'डी० एन० ए०' और 'आर० एन० ए०' पहले से ही सुगठित हैं, प्रत्येक ज्ञान-तन्तु यह जानती है कि पहले क्या हो चुका है। शरीर और मस्तिष्क दूसरों के विचारों, कथनों और कार्यों के प्रति ग्रहणशील हैं। अनभिज्ञता भय पैदा करती है, भय घृणा उत्पन्न करता है, घृणा आत्मविश्वास को नष्ट करती है और यह सब हमें ह्रास और मृत्यु की ओर ले जाता है। अतीत में बहुत-सी प्राचीन संस्कृतियाँ इसी प्रकार के अन्त की ओर उन्मुख हुई होंगी। जीवित रहने के लिए एक को दूसरे के प्रति ग्रहणशील होना ही होगा, भले ही दूसरा कितना ही दोषपूर्ण क्यों न हो।

(a) आप्रवासीजन अपनी नयी व्यवस्था में पहली बार क्षेत्रीय लोगों से किस तरह सम्पर्क स्थापित करते हैं?

(b) प्रारम्भिक काल में लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के क्या कारण थे? प्रारम्भिक काल के कारणों में और आज के लोगों द्वारा किए जाने वाले स्थानान्तरण के कारणों में क्या भिन्नता है?

(c) संस्कृतियाँ कैसे आपस में सम्मिलन करती हैं?

(d) बहुत-सी प्राचीन संस्कृतियाँ कैसे नष्ट हुईं?

(e) लेखक क्यों यह कहता है कि यह सम्भव नहीं है कि कोई संस्कृति पृथकतावाद में जीवित रह सके?

3. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण (Précis) एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। शीर्षक देने की आवश्यकता नहीं है : 60

जब हम किसी नौकरी के लिए आवेदन करते हैं एवं अपना जीवन-वृत्त प्रस्तुत करते हैं तो सामान्यतः हम यह प्रयत्न करते हैं कि हमारा अनुभव, पृष्ठभूमि एवं विशेषताएँ सामने आ जाएँ। बहुत-से लोग अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों को छिपा लेते हैं एवं अपनी महान् उपलब्धियों की ओर ध्यान आकर्षित कराते हैं। जब कार्यदाता ऐसे जीवन-वृत्तों को पढ़ते हैं तो बहुधा यह अनुभव करते हैं कि प्रत्येक आवेदनकर्त्ता यह लिख रहा है कि वह उन महानतम व्यक्तियों में से एक है जो इस दुनिया में आए।

इस सन्दर्भ में, खेल की दुनिया से सम्बन्धित एक सच्ची कहानी की चर्चा की जा सकती है। किसी विश्वविद्यालय की फुटबॉल टीम दौड़ने का अभ्यास कर रही थी। उस टीम का एक खिलाड़ी 'लाइनमैन' की स्थिति पर था। यह खिलाड़ी बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थिति पर था और टीम का सबसे तेज 'लाइनमैन' माना जाता था। एक दिन यह खिलाड़ी अपने प्रशिक्षक के पास गया और उससे सबसे तेज 'रनिंग बैक्स' के साथ पूरे वेग से दौड़ने की अनुमति माँगी। प्रशिक्षक ने उसे अनुमति दे दी।

'लाइनमैन' रोज़ दौड़ने लगा लेकिन प्रत्येक दिन वह सबसे पीछे रहता था। दिन-प्रतिदिन उसने सबसे तेज 'बैक्स' के साथ दौड़ना जारी रखा, लेकिन प्रत्येक दिन वह सबसे पीछे ही रहा। यह स्वाभाविक ही था क्योंकि सामान्यतः 'लाइनमैन' 'रनिंग बैक्स' के समान तेज धावक नहीं माने जाते।

प्रशिक्षक ने इस घटना को आश्चर्यजनक मानते हुए स्वयं से पूछा—"यह खिलाड़ी क्यों सर्वश्रेष्ठ धावकों के साथ दौड़ने की स्पर्धा कर रहा है और लगातार सबसे पीछे ही आ रहा है जबकि यह दूसरे 'लाइनमैनों' के साथ दौड़ते हुए सबसे तेज धावक रह सकता है?"

प्रशिक्षक ने इस युवा खिलाड़ी को परखा और अन्ततोगत्वा यह देखकर कि यह 'लाइनमैन' रोज़ सबसे पीछे ही आ रहा है, उससे पूछा—"तुम दूसरे 'लाइनमैनों' के साथ दौड़कर विजेता होने को क्यों प्राथमिकता नहीं देते? इससे क्या लाभ कि तुम 'रनिंग बैक्स' के साथ दौड़कर पराजित होते रहो?"

प्रशिक्षक फुटबॉल के इस खिलाड़ी का उत्तर सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। इस युवा ने कहा—"मैं यहाँ 'लाइनमैन' को पराजित करने के लिए नहीं हूँ। मैं पहले से ही यह जानता हूँ कि मैं यह कर सकता हूँ। मैं यहाँ यह सीखने के लिए आया हूँ कि तीव्र से तीव्रतर कैसे दौड़ा जा सकता है। महोदय, आपने यदि ध्यान दिया हो तो आप पाएँगे कि मैं दिन-प्रतिदिन 'रनिंग बैक्स' से अपनी दूरी कम करता रहा हूँ।"

यह घटनाक्रम हमारी आध्यात्मिक प्रगति के रहस्य को समेटे हुए हैं। सांसारिक कार्यों में हम सर्वश्रेष्ठ होने या दिखने की चाहत रखते हैं लेकिन जब आध्यात्मिकता का प्रश्न आता है तो हम ईश्वर से अपनी वास्तविकता नहीं छिपा सकते। हमारी प्रगति ईश्वर के लिए एक खुली किताब है। आध्यात्मिक प्रगति हमारे सच्चे प्रयत्नों पर निर्भर है। हम ईश्वर से अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों एवं असफलताओं को नहीं छिपा सकते।

फुटबॉल खिलाड़ी ने यह जान लिया था कि वह पुरानी उपलब्धियों की दुनिया में रहते हुए आगे नहीं बढ़ सकता। वह जानता था कि वह स्वयं को चुनौती देकर ही प्रगति कर सकता है। एक धावक के रूप में अपनी कमज़ोरियों को पहचान कर ही वह आगे बढ़ने का प्रयत्न कर सकता है। स्वयं को अपने से बेहतर व्यक्तियों के सम्मुख रखकर ही वह उस क्षेत्र में सर्वोत्तम बन सकता है, बेहतर व्यक्तियों के सामने उसकी कमज़ोरियाँ प्रगट हो जाएँगी और वह उन्हें दूर कर सकेगा। वह स्वयं को सुधारना चाहता था, वह प्रशंसा का भूखा नहीं था।

फुटबॉल खिलाड़ी यह देख सकता था कि दूसरे 'रनर्स' क्या कर रहे हैं और उनके प्रकाश में अपनी योग्यता को वह विकसित कर सकता था। नित्य के अभ्यास से वह यह जान गया था कि अगली बार उसे और बेहतर करना है। यह करने से वह अपने ध्येय तक पहुँचने में निकट से निकटतर होता गया। जब हम अपनी असफलताओं को देखते हैं तो हम जानते हैं कि हर रोज़ हमें और बेहतर करना है। ऐसे प्रयत्नों से पहले की तुलना में हमारी असफलताएँ कम से कमतर होती जाएँगी। समय होने पर हम अन्ततोगत्वा एक ऐसी स्थिति पर पहुँच जाएँगे जब असफलताओं का प्रतिशत शून्य रह जाएगा।

हम अपनी असफलताओं को ईश्वर से नहीं छिपा सकते क्योंकि वह सब कुछ देख रहा है। ईश्वर यह चाहता है कि हम अपने सद्प्रयत्नों से अपनी असफलताओं को दूर कर सकें। जब ईश्वर यह देखता है कि कठिनाइयों के रहते हुए भी हम सद्प्रयत्नों को करने में दत्तचित्त हैं तो हमारी सच्चाई उसके सामने होती है। तब ईश्वर से हमें अनुग्रह एवं सहानुभूति मिलती है। इस प्रकार, संघर्ष करते हुए हमें सहायता मिलती है। ईश्वर हमें हमारी असफलताओं से ऊपर उठने में शक्ति प्रदान करता है ताकि हम उन असफलताओं को दूर कर सकें एवं प्रगति-पथ पर अग्रसर हो सकें।

4. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 20

Most people involved in the film production industry know that there is a constant evolution. The change is in the way movies are made, discovered, marketed, distributed, shown, and seen. Following independence in 1947, the 1950s and 60s are regarded as the 'Golden Age' of Indian cinema in terms of films, stars, music and lyrics. The genre was loosely defined, the most popular being 'socials', films which addressed the social problems of citizens in the newly developing state. In the mid-1960s, camera technology revolutionized the documentary method by enabling the synchronized recording of image and sound. Today, CINEMA 4D users are free to create scenes without worrying about the size of objects or how many objects are in the scene, shaded settings, texture size, multipass-rendering or eye-catching particle systems.

Until the 1960s, filmmaking companies, many of whom owned studios, dominated the film industry. Artistes and technicians were either their employees or were contracted on a long-term basis. Since the 1960s, however, most performers went the freelance way, resulting in the star system and huge escalations in film production costs. Financing deals in the industry also started becoming murkier and murkier, since then. According to estimates, the Indian film industry has an annual turnover of ₹ 60 billion. It employs more than 6 million people, most of whom are contract workers as opposed to regular employees. In the late 1990s, it was recognized as an industry.

More money impacted the perception, visual representation, and definitions of reality. Like any other media of mass communication, the themes are relevant to their times.

Thus, filmmaking became more expensive and riskier. As opposed to the time of the Gemini Studios, when only 5 percent of a movie was shot outdoor, filmmakers often select oversea locations in order to create greater realism, manage costs more efficiently or source people and props. Filmmakers spend considerable time scouting for the perfect location.

5. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए : 20

हास्य मनुष्य की एक ऐसी योग्यता अथवा गुण है जो स्थितियों को देखकर मनोविनोद की भावना उत्पन्न कर देता है। यह हास्यवृत्ति मनोरंजन का एक घेरा है अथवा मानवीय सम्प्रेषणीयता है जो ऐसी भावनाओं को उत्पन्न करती है अथवा मनुष्यों को हँसाती है अथवा प्रसन्नता का अनुभव कराती है।

आलोचना किसी क्रियाकलाप का फ़ैसला है अथवा सुचिन्तित व्याख्या है। रचनात्मक आलोचना सम्प्रेषणीयता का एक ऐसा प्रकार है जिसमें मनुष्य दूसरे के व्यवहार को ठीक करने का प्रयत्न करता है बिना किसी अधिकार भावना के।

सामान्यतः यह एक कूटनीतिक प्रयत्न है उस मनुष्य के लिए जिसके कार्य सामाजिक रूप से ठीक नहीं हैं। यह रचनात्मक है। यह अधिकार या अपमान का विरोध करती हुई शान्तिपूर्ण प्रयत्नों की ओर बढ़ती है।

व्यंग्य एक ऐसा औज़ार है जो आलोचक द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। यह सामान्यतः मनोरंजक या वाक्शक्ति से परिपूर्ण होता है, हालाँकि व्यंग्य का प्राथमिक उद्देश्य हास्य नहीं है। यह किसी घटना की, किसी व्यक्ति-विशेष की, किसी समूह की बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से की गयी आलोचना है।

व्यंग्य एक मूल्यवान साहित्यिक विधा है। यह किसी निश्चित निशाने को रखती है। यह निशाना आदमी, आदमियों का समूह, विचार, प्रवृत्ति, संस्था या सामाजिक अभ्यास हो सकता है। किसी भी दशा में निशाने की हँसी उड़ाई जाती है।

व्यंग्य क्रोध एवं हास्य का सम्मिश्रण है। यह परेशानी पैदा कर सकता है और यह विडम्बनायुक्त होता है। इसमें विडम्बना आक्षेप के रूप में होती है। अतः बहुधा इसे ग़लत समझ लिया जाता है।

यह एक कलात्मक विधा है जिसमें मानवीय या व्यक्ति-विशेष की असफलताओं, ग़लतबयानियों का वर्णन होता है। यह वर्णन ऐसी व्यंग्यपूर्ण भाषा में होता है जिससे अपेक्षित सुधार आ सके। साहित्य या नाटक इसके मुख्य साधन हैं लेकिन यह फ़िल्मों, कलारूपों या राजनैतिक कार्टूनों में भी पाया जाता है। व्यंग्यकर्त्ता एक ऐसा कलाकार है जो प्रत्येक स्थान पर कुछ-न-कुछ गड़बड़ी देखता है लेकिन उसका प्रस्तुतीकरण क्रोध के स्थान पर हास्य पैदा करता है।

2×5=10

6. *(a)* निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) अंगारों पर लोटना

(ii) अक्ल पर पत्थर पड़ना

(iii) गूलर का फूल होना

(iv) दाई से पेट छिपाना

(v) मक्खियाँ मारना

2×5=10

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :

(i) हम कहे थे।

(ii) युवा पीढ़ी शुद्ध हिन्दी लिखने का प्रयास कर रहा है।

(iii) मैं लिख लिया हूँ।

(iv) लड़की प्रणाम करता है।

(v) पुलिस ने राम में आरोप लगाया।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : 2×5=10

(i) इन्द्र

(ii) अवस्था

(iii) कंचन

(iv) गणेश

(v) जलद

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट होते हुए उनके बीच का अन्तर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो : 2×5=10

(i) आभास–आवास

(ii) अभिज्ञ–अनभिज्ञ

(iii) कृपण–कृपाण

(iv) तप्त–तृप्त

(v) नीरद–नीरज

★ ★ ★